Gavan

by Munshi premchandr · Language: HI

Summary by booksummaryai.com — https://booksummaryai.com/country/hi/gavan

Overview

मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास 'गबन' भारतीय समाज में गहनों के प्रति महिलाओं के आकर्षण और पुरुषों के दिखावे की प्रवृत्ति के घातक परिणामों को दर्शाता है। यह कहानी रमानाथ नामक एक युवक और उसकी पत्नी जालपा के इर्द-गिर्द घूमती है। जालपा को गहनों का बहुत शौक है, और इसी शौक को पूरा करने के लिए रमानाथ सरकारी दफ्तर में गबन कर बैठता है। कहानी दिखावा, भ्रष्टाचार, सामाजिक दबाव और नैतिक पतन के जाल में फंसे एक परिवार की त्रासदी को उजागर करती है।

उपन्यास में प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज की कई बुराइयों पर प्रकाश डाला है, जैसे दहेज प्रथा, न्यायिक व्यवस्था की खामियां, और मध्यम वर्ग की आर्थिक मजबूरियां। रमानाथ का चरित्र मानवीय कमजोरियों और पश्चाताप का प्रतीक है, जबकि जालपा का चरित्र अपनी गलतियों को स्वीकार कर संघर्ष करने वाली महिला का प्रतिनिधित्व करता है। 'गबन' केवल एक प्रेम कहानी या सामाजिक नाटक नहीं है, बल्कि यह मानवीय मनोविज्ञान, नैतिकता और सामाजिक यथार्थ का गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह भौतिकवादी इच्छाओं और उनके परिणामों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

Key Takeaways

- भौतिकवादी इच्छाएं और दिखावे की प्रवृत्ति व्यक्ति को नैतिक पतन की ओर ले जा सकती है।
- अपनी आय से अधिक खर्च करने की आदत अक्सर ऋण और अवैध गतिविधियों को जन्म देती है।
- सामाजिक दबाव और प्रतिष्ठा की चिंता व्यक्ति को गलत निर्णय लेने पर मजबूर कर सकती है।
- गलतियों को स्वीकार करना और उनके परिणामों का सामना करना ही सच्चे पश्चाताप का मार्ग है।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र विचारों वाली होना चाहिए, न कि केवल गहनों या दिखावे पर निर्भर।
- न्याय प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार और देरी आम आदमी के लिए गंभीर समस्याएं पैदा कर सकती है।

Chapter Summaries

भाग 1: जलपा की आभूषण-प्रियता और रामनाथ का विवाह

जलपा बचपन से ही आभूषणों की शौकीन है और उसका जीवन आभूषणों के इर्द-गिर्द घूमता है। उसका विवाह रामनाथ से होता है, जो अपनी पत्नी को खुश रखने के लिए हर संभव प्रयास करता है। रामनाथ की आय सीमित है, लेकिन वह जलपा की आभूषणों की इच्छा पूरी करने के लिए कर्ज लेना शुरू कर देता है। वह अपनी हैसियत से बढ़कर दिखावा करता है, जिससे परिवार पर आर्थिक दबाव बढ़ता है। जलपा को इस बात का अंदाजा नहीं है कि रामनाथ उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए किस हद तक जा रहा है। यह भाग उनके वैवाहिक जीवन की शुरुआत और आभूषणों के प्रति जलपा के अत्यधिक लगाव को दर्शाता है, जो आगे चलकर समस्याओं की जड़ बनता है।

भाग 2: कार्यालय में गबन और चंद्रहार का लालच

रामनाथ अपनी पत्नी के लिए चंद्रहार खरीदने की इच्छा में बुरी तरह फँस जाता है। वह अपने कार्यालय के खजाने से छोटे-छोटे गबन करना शुरू कर देता है, यह सोचकर कि वह बाद में पैसे लौटा देगा। लेकिन एक बार शुरू हुआ यह सिलसिला रुकता नहीं। वह अपनी आय से अधिक खर्च करता है और कर्ज के दलदल में धँसता चला जाता है। चंद्रहार खरीदने के बाद भी उसकी चिंताएँ कम नहीं होतीं, बल्कि बढ़ जाती हैं। यह भाग रामनाथ के नैतिक पतन की शुरुआत और उसके द्वारा किए गए गबन की गंभीरता को दर्शाता है, जो उसे एक बड़े संकट की ओर धकेलता है।

भाग 3: गबन का खुलासा और रामनाथ का पलायन

कार्यालय में लेखा-जोखा (ऑडिट) होने पर रामनाथ द्वारा किए गए गबन का खुलासा हो जाता है। वह पकड़े जाने के डर से बुरी तरह घबरा जाता है और अपनी इज्जत बचाने के लिए कोई रास्ता नहीं देखता। गिरफ्तारी से बचने के लिए रामनाथ इलाहाबाद से कलकत्ता (कोलकाता) भाग जाता है, अपनी पत्नी जलपा और परिवार को पीछे छोड़कर। उसका यह पलायन उसे एक नई और अनिश्चित जिंदगी की ओर ले जाता है, जहाँ उसे अपनी पहचान छिपानी पड़ती है और हर पल पकड़े जाने का डर सताता है। यह भाग रामनाथ के अपराध के उजागर होने और उसके कायरतापूर्ण निर्णय को दर्शाता है, जिसके गंभीर परिणाम उसके और उसके परिवार के लिए होते हैं।

भाग 4: जलपा का संघर्ष और आभूषणों का त्याग

रामनाथ के भाग जाने के बाद जलपा को उसके गबन और कर्ज का पता चलता है। वह समाज और परिवार की आलोचना का सामना करती है। जलपा अपनी सभी आभूषणों को बेचकर रामनाथ के कर्ज को चुकाती है, जिससे परिवार की इज्जत बचती है। वह अपने ससुराल वालों के साथ रहने लगती है और कठिन परिस्थितियों का सामना करती है। इस दौरान जलपा में एक बड़ा बदलाव आता है; वह भौतिकवादी इच्छाओं से ऊपर उठकर एक मजबूत और जिम्मेदार महिला बन जाती है, जो अपने पति को खोजने का दृढ़ संकल्प लेती है।

भाग 5: कलकत्ता में रामनाथ का नया जीवन और ज़ोहरा

कलकत्ता पहुँचकर रामनाथ अपनी पहचान बदलकर रामचरण के रूप में रहने लगता है। वह देवीदीन नामक एक भले-मानुष और उसकी बहू रतन से मिलता है, जो उसे सहारा देते हैं। इसी दौरान वह ज़ोहरा नामक एक वेश्या के संपर्क में आता है। ज़ोहरा उसे आश्रय देती है और रामनाथ उसके साथ रहने लगता है। वह अपनी पिछली जिंदगी और अपराधबोध से घिरा रहता है, लेकिन ज़ोहरा की संगत उसे और अधिक भ्रमित करती है। यह भाग रामनाथ के कलकत्ता में अकेलेपन, उसकी नई पहचान और ज़ोहरा के साथ उसके जटिल संबंधों को दर्शाता है।

भाग 6: जलपा की कलकत्ता यात्रा और खोज

जलपा अपने पति रामनाथ को खोजने के लिए कलकत्ता की यात्रा करती है। वह दृढ़ संकल्पित है और किसी भी कीमत पर रामनाथ को ढूँढना चाहती है। कलकत्ता पहुँचकर वह देवीदीन और रतन से मिलती है, जो उसकी मदद करते हैं। जलपा को रामनाथ के बारे में कोई ठोस जानकारी नहीं मिलती, लेकिन वह अपनी खोज जारी रखती है। इस भाग में जलपा की हिम्मत, उसका समर्पण और एक अनजान शहर में अपने पति की तलाश में भटकने का संघर्ष दिखाया गया है, जो उसकी बदलती हुई शख्सियत को उजागर करता है।

भाग 7: रामनाथ का फँसना और ज़ोहरा का हृदय परिवर्तन

कलकत्ता में रामनाथ एक हत्या के झूठे मुकदमे (चौकीदार का मामला) में फँस जाता है। पुलिस उसे झूठी गवाही देने के लिए मजबूर करती है। ज़ोहरा, जो पहले स्वार्थी थी, रामनाथ के प्रति सहानुभूति और प्रेम महसूस करने लगती है। वह रामनाथ को बचाने की कोशिश करती है और उसकी मदद करने का फैसला करती है। इसी दौरान जलपा को रामनाथ का पता चलता है, लेकिन रामनाथ शर्मिंदगी के कारण उससे मिलने से कतराता है। यह भाग रामनाथ की नई मुसीबत और ज़ोहरा के नैतिक परिवर्तन को दर्शाता है।

भाग 8: अदालत में सच्चाई और रामनाथ की स्वीकारोक्ति

अदालत में मुकदमा चलता है। रामनाथ पर झूठी गवाही देने का दबाव है, जिससे निर्दोष लोग फँस सकते हैं। जलपा, देवीदीन, रतन और ज़ोहरा मिलकर सच्चाई को सामने लाने के लिए संघर्ष करते हैं। वे पुलिस के भ्रष्टाचार और रामनाथ पर डाले गए दबाव को उजागर करने की कोशिश करते हैं। अंततः, रामनाथ अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर अपने गबन और झूठी गवाही के लिए मजबूर किए जाने की बात स्वीकार कर लेता है। यह भाग न्याय की लड़ाई और रामनाथ के पश्चाताप को दर्शाता है।

भाग 9: पुनर्मिलन और नए जीवन की शुरुआत

रामनाथ की स्वीकारोक्ति और जलपा व अन्य लोगों के प्रयासों से सच्चाई सामने आती है। रामनाथ को उसके गबन के लिए दंड मिलता है, लेकिन उसकी ईमानदारी और पश्चाताप के कारण उसे कुछ राहत मिलती है। रामनाथ और जलपा का भावनात्मक पुनर्मिलन होता है। वे दोनों अपने अनुभवों से सीखकर एक-दूसरे को समझते हैं और अपने रिश्ते को एक नई शुरुआत देते हैं। यह भाग उनके संबंधों की परिपक्वता और जीवन के प्रति उनके बदले हुए दृष्टिकोण को दर्शाता है।

भाग 10: सीख और भविष्य की दिशा

उपन्यास का समापन रामनाथ और जलपा के एक नए, सरल और ईमानदार जीवन की ओर बढ़ने के साथ होता है। उन्होंने आभूषणों और दिखावे की निरर्थकता को समझ लिया है, और यह भी कि सच्चा सुख भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि ईमानदारी और आपसी प्रेम में है। वे अब एक-दूसरे के साथ और नैतिक मूल्यों के साथ जीने का संकल्प लेते हैं, अपने अतीत की गलतियों से सीखकर। यह भाग कहानी के नैतिक निष्कर्ष को प्रस्तुत करता है, जिसमें भौतिकवादी इच्छाओं के बजाय ईमानदारी, प्रेम और संतोष को महत्व दिया गया है। यह प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थवाद और नैतिक शिक्षा का प्रतीक है, जो पाठकों को एक गहरा संदेश देता है।

Themes

- भौतिकवाद का पतन
- सामाजिक दिखावा
- नैतिक भ्रष्टाचार
- महिलाओं का स्वावलंबन
- पश्चाताप और सुधार
- न्याय प्रणाली की खामियां

Notable Quotes

- "गहने केवल स्त्रियों के लिए नहीं, पुरुषों के लिए भी उतने ही आवश्यक हैं, क्योंकि वे स्त्रियों को प्रसन्न रखते हैं।" — यह पंक्ति उपन्यास में गहनों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण और उनके महत्व को दर्शाती है, जो रमानाथ के कार्यों का एक कारण बनता है।
- "मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अपना मन है, जो उसे बुरी राह पर ले जाता है।" — यह रमानाथ के आंतरिक संघर्ष और उसकी कमजोरियों को उजागर करता है, जिससे वह गबन करने के लिए प्रेरित होता है।
- "जो समाज अपनी स्त्रियों को केवल गहनों से सजाना जानता है, वह कभी उन्नति नहीं कर सकता।" — यह प्रेमचंद का सामाजिक टिप्पणी है, जो महिलाओं की स्थिति और समाज के भौतिकवादी दृष्टिकोण पर सवाल उठाती है।
- "सच्चा सुख त्याग में है, भोग में नहीं।" — यह जालपा के चरित्र विकास और उसके द्वारा प्राप्त नैतिक ज्ञान को दर्शाता है, जब वह अपनी इच्छाओं से ऊपर उठती है।

Frequently Asked Questions

गबन किस बारे में है?

गबन एक युवक रमानाथ और उसकी पत्नी जालपा की कहानी है। जालपा को गहनों का शौक है, जिसे पूरा करने के लिए रमानाथ सरकारी दफ्तर में गबन कर बैठता है। उपन्यास दिखावा, भ्रष्टाचार, सामाजिक दबाव और नैतिक पतन के परिणामों को दर्शाता है, साथ ही मानवीय कमजोरियों और पश्चाताप पर भी प्रकाश डालता है।

क्या गबन पढ़ने लायक है?

हाँ, गबन निश्चित रूप से पढ़ने लायक है। यह प्रेमचंद के महानतम उपन्यासों में से एक है, जो भारतीय समाज की गहरी समझ और मानवीय मनोविज्ञान का उत्कृष्ट चित्रण करता है। यह आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह भौतिकवादी इच्छाओं, सामाजिक दबावों और नैतिकता के मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

गबन का अंत कैसे होता है?

Spoiler: उपन्यास के अंत में रमानाथ अपनी गलतियों को स्वीकार करता है और उसे सजा मिलती है। जालपा भी अपनी गहनों की लालसा से ऊपर उठकर परिपक्व और आत्मनिर्भर बन जाती है। कहानी दिखावे की दुनिया से निकलकर सच्चाई और ईमानदारी के महत्व को स्थापित करती है, और रमानाथ के सुधार के साथ समाप्त होती है।

गबन किसे पढ़ना चाहिए?

यह उपन्यास उन सभी पाठकों के लिए है जो सामाजिक यथार्थवादी साहित्य, मानवीय मनोविज्ञान और नैतिक दुविधाओं पर आधारित कहानियों में रुचि रखते हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपयोगी है जो भारतीय समाज, उसके मूल्यों और प्रेमचंद की लेखन शैली को समझना चाहते हैं।

गबन पढ़ने में कितना समय लगता है?

औसत पाठक को 'गबन' पढ़ने में लगभग 6 से 8 घंटे लग सकते हैं। यह एक मध्यम आकार का उपन्यास है, जिसकी गति धीमी लेकिन विचारोत्तेजक है।

Questions & Answers

गबन के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं और उनके केंद्रीय संघर्ष क्या हैं?

गबन के मुख्य पात्र रमानाथ और उसकी पत्नी जालपा हैं। रमानाथ एक साधारण क्लर्क है जो अपनी पत्नी को खुश रखने और समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए संघर्ष करता है। उसका केंद्रीय संघर्ष अपनी आय से अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति, कर्ज और बेईमानी के जाल में फँसना है। जालपा का केंद्रीय संघर्ष गहनों के प्रति अपने अत्यधिक मोह और पति की आर्थिक स्थिति के बीच संतुलन बनाना है, जो अंततः उसे आत्म-बोध और त्याग की ओर ले जाता है।

उपन्यास "गबन" का शीर्षक कहानी के लिए कितना उपयुक्त है?

उपन्यास "गबन" का शीर्षक अत्यंत उपयुक्त है। यह न केवल रमानाथ द्वारा सरकारी धन के गबन को दर्शाता है, बल्कि समाज में व्याप्त नैतिक मूल्यों के गबन, रिश्तों में विश्वास के गबन और व्यक्ति द्वारा अपनी वास्तविक पहचान से गबन को भी इंगित करता है। यह शीर्षक कहानी के केंद्रीय विषय – लालच, दिखावा और उसके दुष्परिणामों – को सटीक रूप से प्रस्तुत करता है, जहाँ एक छोटी सी गलती कैसे व्यक्ति के पूरे जीवन को उलझा देती है।

जालपा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं और उसके जीवन में गहनों का क्या महत्व है?

जालपा एक सुंदर, महत्वाकांक्षी और गहनों की शौकीन युवती है। प्रारंभ में, वह अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए पति पर दबाव डालती है, जिससे रमानाथ कर्ज के दलदल में धँस जाता है। उसके लिए गहने केवल आभूषण नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और स्त्रीत्व का प्रतीक हैं। हालांकि, उपन्यास के दौरान, वह अपनी गलतियों को पहचानती है, आत्म-त्याग और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देती है, और अंततः गहनों के मोह से ऊपर उठकर एक परिपक्व और सशक्त नारी के रूप में उभरती है।

रमानाथ के चरित्र की कमजोरियाँ और मजबूरियाँ क्या हैं?

रमानाथ एक कमजोर इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति है जो अपनी पत्नी को खुश रखने और समाज में अपनी झूठी शान बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। उसकी मुख्य कमजोरियाँ दिखावा, फिजूलखर्ची और नैतिक साहस की कमी हैं। वह अपनी आय से अधिक खर्च करता है, कर्ज लेता है और अंततः सरकारी धन का गबन कर बैठता है। उसकी मजबूरियाँ उसकी पत्नी का गहनों के प्रति मोह और समाज में अपनी इज्जत बनाए रखने का दबाव हैं, जो उसे गलत रास्ते पर धकेल देते हैं।

प्रेमचंद ने "गबन" के माध्यम से तत्कालीन समाज की कौन बुराइयों पर प्रकाश डाला है?

प्रेमचंद ने "गबन" के माध्यम से तत्कालीन भारतीय समाज की कई बुराइयों पर प्रकाश डाला है। इनमें दिखावे की प्रवृत्ति, फिजूलखर्ची, गहनों के प्रति अत्यधिक मोह, कर्जखोरी, भ्रष्टाचार (विशेषकर पुलिस और न्याय व्यवस्था में), और नैतिक मूल्यों का पतन शामिल हैं। उन्होंने यह भी दिखाया है कि कैसे सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत कमजोरियाँ एक व्यक्ति को अपराध की ओर धकेल सकती हैं, और कैसे धन का लालच रिश्तों और ईमानदारी को नष्ट कर देता है।

रमानाथ किस प्रकार कर्ज के जाल में फँसता है और इसके क्या परिणाम होते हैं?

रमानाथ अपनी पत्नी जालपा की गहनों की इच्छा पूरी करने और अपनी झूठी शान बनाए रखने के लिए अपनी आय से अधिक खर्च करता है। वह पहले छोटे-मोटे कर्ज लेता है, फिर उन्हें चुकाने के लिए बड़े कर्ज लेता है, और अंततः सरकारी दफ्तर के पैसों का गबन कर बैठता है। इस कर्ज के जाल में फँसने के परिणामस्वरूप उसे कलकत्ता भागना पड़ता है, उसे पुलिस का मुखबिर बनना पड़ता है, और उसका जीवन पूरी तरह से बिखर जाता है, जिससे उसे और उसके परिवार को भारी मानसिक और सामाजिक पीड़ा झेलनी पड़ती है।

देवीदीन का चरित्र उपन्यास में क्या भूमिका निभाता है?

देवीदीन उपन्यास में एक महत्वपूर्ण सहायक पात्र है। वह एक ईमानदार और सिद्धांतवादी व्यक्ति है जो रमानाथ को कर्ज से उबारने और उसे सही राह दिखाने की कोशिश करता है। वह रमानाथ के पिता का पुराना मित्र है और उसके परिवार का शुभचिंतक है। देवीदीन का चरित्र ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है, जो रमानाथ के नैतिक पतन के विपरीत खड़ा है। वह संकट के समय रमानाथ और जालपा की मदद करता है और उन्हें सहारा देता है।

उपन्यास में पुलिस और न्याय व्यवस्था का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उपन्यास में पुलिस और न्याय व्यवस्था का चित्रण अत्यंत नकारात्मक और यथार्थवादी ढंग से किया गया है। प्रेमचंद ने दिखाया है कि कैसे पुलिस भ्रष्ट, स्वार्थी और क्रूर है, जो निर्दोषों को फँसाती है और अपराधियों को पैसे लेकर छोड़ देती है। न्याय व्यवस्था भी धनवानों और प्रभावशाली लोगों के पक्ष में झुकी हुई दिखाई गई है, जहाँ गरीब और कमजोर व्यक्ति को न्याय मिलना मुश्किल है। रमानाथ को पुलिस के मुखबिर के रूप में काम करने पर मजबूर किया जाता है, जो इस व्यवस्था की विडंबना को उजागर करता है।

उपन्यास के अंत तक जालपा के चरित्र में क्या महत्वपूर्ण परिवर्तन आता है?

उपन्यास के अंत तक जालपा के चरित्र में एक गहरा और सकारात्मक परिवर्तन आता है। गहनों के प्रति अपने प्रारंभिक मोह और दिखावे की प्रवृत्ति को छोड़कर, वह एक जिम्मेदार, समझदार और आत्म-त्यागी महिला बन जाती है। वह रमानाथ की गलतियों को समझती है, उसे माफ करती है, और उसे बचाने के लिए हर संभव प्रयास करती है। वह अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना सीखती

है और परविार के सम्मान तथा पति की सुरक्षा को सर्वोपरि मानती है।

रमानाथ को कलकत्ता क्यों भागना पड़ता है?

रमानाथ को कलकत्ता इसलिए भागना पड़ता है क्योंकि वह अपने दफ्तर के सरकारी पैसों का गबन कर लेता है। उसने जालपा के लिए गहने खरीदने और अपनी शान बनाए रखने के लिए भारी कर्ज लिया था, और जब कर्ज चुकाने का दबाव बढ़ा तो उसने सरकारी खजाने से पैसे निकाल लिए। जब उसके गबन का भेद खुलने का डर होता है और पुलिस उसे पकड़ने आती है, तो वह गरिफ्तारी से बचने के लिए रातोंरात कलकत्ता भाग जाता है, जहाँ वह एक नया जीवन शुरू करने की कोशिश करता है।

जोहरा का चरित्र जालपा के जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

जोहरा का चरित्र जालपा के जीवन को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। वह एक तवायफ है जो रमानाथ के संपर्क में आती है जब वह कलकत्ता में होता है। जोहरा रमानाथ की मदद करती है और उसे सहारा देती है, लेकिन उसकी उपस्थिति जालपा के मन में संदेह और ईर्ष्या पैदा करती है। हालांकि, अंततः जोहरा का त्याग और उसकी मानवीयता जालपा को रमानाथ की स्थिति को समझने और उसे माफ करने में मदद करती है, जिससे जालपा के चरित्र में और अधिक परिपक्वता आती है।

"गबन" उपन्यास का मुख्य नैतिक संदेश क्या है?

"गबन" उपन्यास का मुख्य नैतिक संदेश यह है कि दिखावा, लालच और फिजूलखर्ची व्यक्ति को नैतिक पतन की ओर ले जाती है। यह सिखाता है कि ईमानदारी, संतोष और कर्तव्यनिष्ठा ही वास्तविक सुख और सम्मान का मार्ग है। उपन्यास यह भी दर्शाता है कि कैसे सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत कमजोरियाँ एक व्यक्ति को अपराध की ओर धकेल सकती हैं, और कैसे प्रेम और त्याग के माध्यम से गलतियों को सुधारा जा सकता है और रिश्तों को बचाया जा सकता है।

उपन्यास में स्त्री-पुरुष संबंधों को किस प्रकार दर्शाया गया है?

उपन्यास में स्त्री-पुरुष संबंधों को जटिल और यथार्थवादी ढंग से दर्शाया गया है। यह दिखाता है कि कैसे एक पति (रमानाथ) अपनी पत्नी (जालपा) को खुश रखने के लिए गलत रास्ते पर चल पड़ता है, और कैसे पत्नी की इच्छाएँ पति पर भारी पड़ सकती हैं। हालांकि, यह भी दर्शाता है कि कैसे संकट के समय पति-पत्नी एक-दूसरे का सहारा बनते हैं, गलतियों को माफ करते हैं, और प्रेम तथा त्याग के माध्यम से अपने रिश्ते को मजबूत करते हैं। यह संबंधों में समझदारी और परिपक्वता के महत्व पर जोर देता है।

"गबन" में प्रेमचंद की यथार्थवादी लेखन शैली के कुछ उदाहरण दीजिए।

"गबन" में प्रेमचंद की यथार्थवादी लेखन शैली कई स्तरों पर दिखती है। उन्होंने तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमताओं, भ्रष्टाचार (विशेषकर पुलिस और न्याय व्यवस्था में), और मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं तथा कमजोरियों का सजीव चित्रण किया है। पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, जैसे रमानाथ की कमजोर इच्छाशक्ति और जालपा का गहनों के प्रति मोह, अत्यंत वास्तविक लगता है। उन्होंने ग्रामीण और शहरी जीवन के संघर्षों को भी बिना किसी आदर्शवाद के, उसकी कड़वी सच्चाइयों के साथ प्रस्तुत किया है, जिससे कहानी विश्वसनीय और मार्मिक बनती है।

Spoiler: उपन्यास का अंत कैसे होता है और रमानाथ तथा जालपा का क्या होता है?

Spoiler: उपन्यास के अंत में, रमानाथ और जालपा दोनों अपने अनुभवों से सीखकर परिपक्व हो जाते हैं। रमानाथ, जो पुलिस का मुखबिर बन गया था, अंततः अपनी गलती स्वीकार करता है और अपने गबन के मामले में सच्चाई बताता है। जालपा, जो पहले गहनों की शौकीन थी, अब त्याग और समझदारी की मूर्ति बन जाती है। वे दोनों अपने पुराने जीवन को छोड़कर एक नए, ईमानदार और संतोषी जीवन की शुरुआत करते हैं। उपन्यास का अंत आशावादी है, जहाँ पश्चाताप और सुधार के माध्यम से जीवन को फिर से संवारा जा सकता है।